हमारा हर कार्य उपयुक्त होना चाहिए

– आचार्य महाश्रमण

राजलदेसर, 13 फरवरी। ''आदमी सोता भी है और जागता भी है। दोनों ही कार्य जरुरी है। दोनों में सामंजस्य स्थापित होना चाहिए। बिना सामंजस्य के संतुलन गड़बड़ा जाता है।'' उक्त उद्‌गार राष्ट्रसन्त आचार्यश्री महाश्रमण ने अध्यात्म समवसरण में मंगलभावना समारोह में व्यक्त किये।

उन्होंने श्रीमद्‌भागवत्‌गीता का वर्णन करते हुए कहा – गीताकार ने सुन्दर व्याख्या करते हुए समझाया है कि हमारा हर कार्य युक्त अर्थात् उपर्युक्त होना चाहिए। खाना, पीना, उठना, बैठना, बोलना, सोना, चलना–फिरना, विहार करना आदि सभी कार्यों में विवेक और संयम रखना चाहिए। आचार्य महाप्रज्ञ की कही बात का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि आदमी को प्रतिदिन 4 कि.मी. घूमना चाहिए, घूमने से स्वास्थ्य के लिए सुरक्षा कवच का निर्माण होता है। शरीर को श्रम करना चाहिए। हर कार्य में अति वर्जित है।

उन्होंने कहा – साधु–साध्वियों में हृदयघात की बीमारी नहीं होती, इसके पीछे मूल कारण श्रम है। श्रम से हृदय को ऊर्जा मिलती है जिससे हृदय की कार्यक्षमता निरन्तर गतिशील रहती है।

उन्होंने कहा – जागता कौन है ? अज्ञानी जागता है फिर भी वह मूर्छा से मुक्त नहीं रहता। जो ज्ञानी है, मुनि है, वह शरीर से सोते हुए भी मूर्छा से मुक्त रहता है अर्थात् चेतन अवस्था में रहता है।

उन्होंने कहा – कल से अहिंसा यात्रा शुरू कर रहे हैं। यह यात्रा आचार्य महाप्रज्ञ के नेतृत्व में 7 वर्षों तक विभिन्न प्रान्तों में अहिंसा की अलख जगाते हुए चली अब इसे पुनः शुरू कर रहा हूँ। आशा है यह यात्रा सफल हो, आत्म कल्याणकारी हो, जनकल्याणकारी हो। सबमें अनुकम्पा की चेतना का विकास हो।

इससे पूर्व 6 फरवरी को दीक्षित साधु–साध्वियों को आचार्य महाश्रमण द्वारा महाव्रतों का विस्तार से प्रत्याख्यान करवाकर बड़ी दीक्षा प्रदान की गई। मंगल भावना समारोह में बोलते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा – यह वृहद् मर्यादा महोत्सव व्यवस्थित तरीके से सुसम्पन्न हुआ, प्रसन्नता है। सबमें धर्म की चेतना का विकास हो, संयम का विकास हो, अनुकम्पा का विकास हो।

कार्यक्रम में नवदीक्षित मुनि आर्जवकुमार, नवदीक्षित साध्वियां – मयंकयशा एवं विपुलयशा ने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का शुभारम्भ महिला मण्डल के मंगलाचारण से हुआ। समारोह में मर्यादा महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, कार्यकारी अध्यक्ष मंगतमल दुगड़, महामंत्री हनुमानमल दुगड़, कार्यकारी मंत्री कुलदीप बैद, कन्या मण्डल, गणेशमल नाहर, महिला मण्डल की मंत्री केशरदेवी दुगड़, युवक परिषद्, सभा के अध्यक्ष हुणतमल नाहर आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

सेवा सबसे बड़ा धर्म

– आचार्य महाश्रमण

राजलदेसर, 13 फरवरी। भारतीय संस्कृति में सेवा को विशेष महत्व दिया गया है। श्रीनाथ नगरगौशाला (पिंजरा पोळ) में गायों के प्रति जो सेवा भावना है, गायों की सेवा का जो उपक्रम चल रहा है वो लौकिक दृष्टि से सराहनीय है। उक्त उद्‌गार राष्ट्रसन्त आचार्यश्री महाश्रमण ने श्रीनाथ नगर गौशाला प्रांगण में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा – गौशाला के प्रति पुनीत भावना एवं भाव भी भाग्य से मिलते हैं। बिना भाग्य के कुछ भी नहीं मिलता।

उन्होंने कहा – आगमों एवं जैनधर्म में 'गो' शब्द से जुड़े अनेकों शब्द मिलते हैं। हम साधुओं के लिए गोचरी शब्द प्रयुक्त हुआ है जिसका भावार्थ है गायों की तरह चरना, गायों की तरह विचरण करना। गोचरी के अलावा भी अनेकों शब्द गायों से जुड़े हुए हैं।

उन्होंने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा – सेवाभावी कार्यकर्ताओं को सुख–दुःख की परवाह किये बिना कार्य करते रहना चाहिए। उन्हें कार्य करने के बदले मान–सम्मान मिले या न मिल, उन्हें केवल निःस्वार्थ भाव से सेवा कार्य करते रहना चाहिए, पुरुषार्थ करते रहना चाहिए। हर स्थिति में समभाव रहें।

उन्होंने कहा – गायों के अलावा भी सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा की भावना होनी चाहिए। अनुकम्पा की भावना का विकास हो। हर संस्था के कार्यों में अहिंसा की भावना रहे, यह अपने आप में बड़ा धर्म माना जाता है। धर्म उत्कृष्ट है, मंगल है। संयम, सेवा, तपस्या धर्म हैं।

इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण ने अपने संदेश में कहा – सेवा जैसे पुनीत कार्यों के साथ जुड़ने वाले सभी व्यक्ति नशा नहीं करें। उनका जीवन व्यसनमुक्त हो। अहिंसा की भावना निरन्तर बनी रहे। अनुकम्पा की चेतना का विकास हो।

इससे पूर्व गौशाला के मंत्री चम्पालाल पाण्डे ने आचार्य प्रवर का स्वागत करते हुए 'पिंजरा पोळ' की गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने 'पिंजरा पोळ' का अर्थ बताते हुए कहा – पिंजर पशुओं के शरण एवं भरण पोषण हेतु स्थापित स्थल। उन्होंने कहा – वर्तमान में यहाँ चार सौ से अधिक रूग्ण, कमजोर गायें है, जिनका पालन–पोषण, दान–अनुदान के द्वारा होता है। जिन गायों के दूध होता है, वह बछड़े–बछड़ियों को ही पिला दिया जाता है, बेचा नहीं जाता।

सर्वप्रथम आचार्यप्रवर से पूरी गौशाला का भ्रमण कर पगलिया किया एवं गौशाला की गतिविधियों का अवलोकन किया। इस अवसर पर श्रीनाथ नगर गौशाला के अधिकारी, कार्यकर्ता, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में जैन–जैनेतर श्रद्धालु उपस्थित थे।

अध्यात्म समवसरण

अध्यात्म समवसरण

समवसरण
अभिनंदन
समिति, राजलदेसर

श्रीकरणी प्याऊ

श्रीनाथ नगर गौशाला
सिमसिया रोड, राजलदेसर (चूरू)

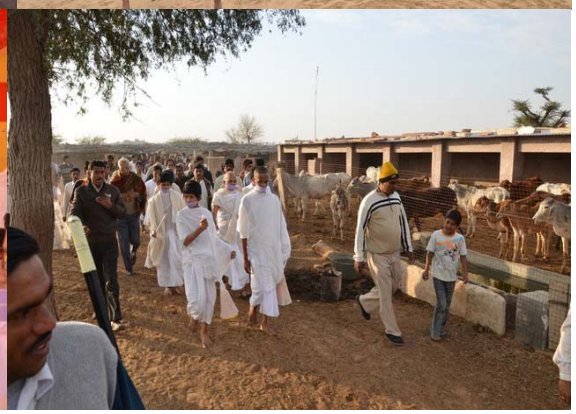

अध्यात्म समवसरण

147वें मर्यादा महोत्सव की उपलब्धियां

1. **गुरुदेव का प्रथम मर्यादा महोत्सव :** तेरापंथ धर्मसंघ का 147वां मर्यादा महोत्सव आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में होने वाले प्रथम मर्यादा महोत्सव बना।

2. **मंत्री मुनि की नियुक्ति :** आचार्य प्रवर ने इतिहास की पुनरावृति करते हुए 52 वर्षों बाद तेरापंथ धर्म संघ में मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' की मंत्री मुनि के रूप में नियुक्ति की।

3. **बड़ी संख्या में साधु–साध्वी समाज की उपस्थिति :** 147वें मर्यादा महोत्सव पर 91 सन्त, 301 साध्वियां, एक समण और 96 समणियां, कुल 489 उपस्थित हुए।

4. **बड़ी दीक्षा से पूर्व सह अग्रणी :** साध्वी मंगलप्रज्ञा को उनकी बड़ी दीक्षा से पूर्व अर्थात् दीक्षा के पाँचवे दिन ही सह अग्रणी बना दिया गया, ऐसा तेरापंथ के इतिहास में प्रथम बार हुआ है।

5. **रत्नादिक साधु–साध्वियों के लिए आज्ञानुवर्ती शब्द प्रयुक्त :** संघ के रत्नादिक साधु–साध्वियों के लिए पूज्यप्रवर ने सम्मान देते हुए शिष्य की बजाए आज्ञानुवर्ती शब्द प्रयुक्त किया।

6. **तेरापंथ भवन का निर्माण :** 147वें मर्यादा महोत्सव से पूर्व समाज का एक और विशाल भवन 'तेरापंथ भवन' का निर्माण हुआ। भवन का लोकार्पण आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य एवं पगलिया से हुआ।

7. **चिकित्सा षिविरों की भरमार :** 147वां मर्यादा महोत्सव ''हेल्थ इज वेल्थ'' की तर्ज पर आधारित था। गुरुदेव के राजलदेसर मंगलप्रवेश के साथ ही 25 जनवरी से अणुव्रत समिति एवं महिला मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में नीरा बैद फाउन्डेशन के सौजन्य से विकलांगता निवारण शिविर, कैंसर निवारण शिविर, श्रवण यन्त्र वितरण शिविर, ते.यु.प. के तत्वावधान में हॉमियोपैथिक शिविर, मर्यादा महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति के तत्वावधान में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा सैलबी हॉस्पीटल अहमदाबाद का अस्थिरोग निवारण शिविर, विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा शिविर, राजलदेसर नागरिक परिषद्, बम्बई के तत्वावधान में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का मल्टी जाँच शिविर, बेंगलौर के प्रेमप्रकाश हीरावत के द्वारा साधु–साध्वियों के चश्मों का शिविर लगा। इन शिविरों के माध्यम से हजारों लोगों को लाभ प्राप्त हुआ। इसके अलावा मर्यादा महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति की तरफ से आयुर्वेदिक, हॉमियोपैथिक व एलोपैथिक चिकित्सा सेवा की व्यवस्था निरन्तर चालू रही।

8. **दो नई देहात अणुव्रत समितियों का गठन :** राजलदेसर अणुव्रत समिति के तत्वावधान में पूर्व में बनी देहात अणुव्रत समितियों जोरावरपुरा, लूणासर, रत्नादेसर का पुनर्गठन किया गया। वहीं दो नई देहात अणुव्रत समितियों बण्डवा एवं भरपालसर का गठन भी किया गया।

9. **हर घर किया पावन :** मर्यादा महोत्सव जैसे व्यस्त प्रवास काल के बावजूद भी आचार्य प्रवर प्रति दिन सवेरे के समय घर–घर दर्शन देने पधारते। आचार्य प्रवर ने साधु–साध्वियां की अन्तरंग सारणा–वारणा, संघ की व्यवस्थाओं आदि महत्वपूर्ण कार्यों के साथ–साथ श्रद्धालुओं को भी सम्भाला। वे केवल जैनों के घर ही नहीं बल्कि जैनेतर श्रद्धालुओं के घर भी पधारे। इससे एक सुन्दर नवीन माहौल का निर्माण हुआ।

10. **विभिन्न अलंकरणों से अलंकृत राजलदेसर वासी :** आचार्यश्री महाश्रमण ने 147वें मर्यादा महोत्सव के अवसर पर राजलदेसर के विभिन्न श्रावक–श्राविकाओं को उनकी धर्मसंघ की

सेवा, समर्पण भावना एवं अन्य सामाजिक क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्यों के आधार सम्बोधन प्रदान किया जो इस प्रकार है :

गुरुदेव ने नोरतनमल बैद को शासनसेवी, शुभकरण बैद (लाछड़सर वाले), श्रीचन्द डागा को श्रद्धानिष्ठ श्रावक, श्रीमती विजयादेवी बैद, सुखराज देवी बैद को श्रद्धा की प्रतिमूर्ति, व सुवटीदेवी बैद को तत्वज्ञ श्राविका के सम्बोधन से सम्बोधित किया। इसी क्रम में 2010 के लिए श्रीजैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा ने स्व. मांगीलाल कुण्डलिया को श्रद्धानिष्ठ श्रावक एवं स्व. गणेशीदेवी कुण्डलिया को श्रद्धा की प्रतिभूति का सम्बोधन अलंकरण प्रदान किया। इसी क्रम में गुलाबचन्द चिण्डालिया (पूर्व अध्यक्ष, जैन विश्व भारती) को संघ सेवा पुरस्कार एवं राजलदेसर तेरापंथी सभा के मंत्री नोरतनमल बैद को समाज सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया।

11. **प्रभारियों की नियुक्तियां :** आचार्यप्रवर ने तेरापंथ धर्मसंघ की बहुआयामी गतिविधियों के लिए पूर्व निर्धारित सन्तों को यथावत् रखते हुए कुछ नए प्रभारी एवं सहप्रभारी नियुक्त किये। जिसमें तेरापंथ की सर्वोच्च नियामक संस्था तेरापंथ विकास परिषद् के प्रभारी के लिए मुनि उदित कुमार को, ज्ञानशाला के सहप्रभारी मुनि हिमांशु कुमार, तेरापंथ युवक परिषद् के सहप्रभारी मुनि योगेशकुमार, जीवन विज्ञान के सहप्रभारी मुनि नीरजकुमार, समण संस्कृति संकाय के सहप्रभारी मुनि जयन्त कुमार, साहित्य समिति में मुनि विनयकुमार और मुनि जितेन्द्रकुमार को नियुक्त किया।

12. **सात समन्दर पार राजलदेसर की पहचान** : 147वें वृहद् मर्यादा महोत्सव एवं आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में हुए प्रथम मर्यादा महोत्सव के द्वारा राजलदेसर की पहचान सात समन्दर पार तक पहुँची एवं तेरापंथ इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखने वाला अध्याय बन गया।

13. **अहिंसा यात्रा का पुनः शुभारम्भ :** आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा की गई 7 वर्षीय सफलतम अहिंसा यात्रा के पश्चात् आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा राजलदेसर से एक बार पुनः अहिंसा यात्रा का शुभारम्भ हुआ।

अषोक बैद 'बाडेला'
मीडिया प्रभारी,
आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव
प्रवास व्यवस्था समिति,
राजलदेसर